श्री जिनेन्द्राय नमः ।

मानिक विलास ॥

१ पद—राग ठुमरी ॥

चलो भवि पावापुर में पूजन कों जिन राज ॥ टेक ॥ जहां वसुविधि हरि शिवत्रिय पाई महावीर महाराज ॥ चलो० ॥१॥ जिन के दर्शन तें अघ विनसत दरशत शिवमग साज । वसुविधि पूज रचाय गाय गुण कीजे आतम काज ॥ चलो० ॥२॥ वे प्रभु दीनदयाल जगत गुरु राखत जग की लाज । मानिक या भवदधि अथाह में वे प्रभु धर्म जहाज ॥ चलो० ॥३॥